स्टीविया रिबॉडियाना

RSMPB JAIPUR

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

स्टीविया रिबॉडियाना

1.वानस्पतिक नामः

Stevia rebaudiana (Bertoni) Hemsl. (Eupatorium rebaudiana)

कुल : Asteraceae

2.सामान्य वर्णनः स्टीविया रिबॉडियाना एक बहुवर्षायु कोमल हर्ब है । इसकी पत्तियों से प्राप्त शुगर डायबिटीज के रोगियों के लिये मीठे का एक अति उत्तम विकल्प माना जाता है। इसकी पत्तियों में टेबल शुगर से 150 गुना ज्यादा मीठापन होता है तथा सुक्रोज से 300 गुनी मीठी होती है। यह मीठे का प्राकृतिक पदार्थ है तथा कृत्रिम रूप से मीठा स्वाद पैदा करने वाले पदार्थ जैसे सेक्रीन, एस्पार्टम, एसलफोम–के इत्यादि का यह एक बेहतर विकल्प है। इसके अतिरिक्त इसे एक म्यूटेंट फगंस जिबरेला फुजिकोरोई से जिब्रेलिक एसिड़ निकालने में भी काम में लिया जाता है।

3.भौगोलिक विवरणः–मूल रूप से उत्तरी–पूर्वी पेरागुए में पाई जाती थी तथा संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील, जापान, कोरिया, ताईवान और दक्षिणी–पूर्वी एशिया में इसकी कृषि की जाती है। है।भारत में मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल

आदि प्रदेशों में स्टीविया की वाणिज्यिक खेती की जाती है।

3. कृषि तकनीकः– रेतीली दोमट मिट्टी जहॉ पर पानी का बहुतायत हो, वहॉ पर इसकी खेती की जा सकती है। भूमि का पी. एच 6.5–7.5 इस पौधें की बढ़त के लिये उत्तम है। क्षारीय भूमियों में इसकी खेती नहीं की जानी चाहिये। यह जलभराव के प्रति भी अत्याधिक संवेदनशील है अतः दलदली भूमि में यह नहीं आ पाती है। यह 11–14 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान में हो सकता है। वार्षिक तापक्रम 31 डिग्री सेल्सियस तथा वर्षा का औसत 1400 मि.मि प्रति वर्ष इसके लिये उत्तम रहते हैं। इस पौधे की पत्तियों के अधिक उत्पादन के लिये कम से कम पाला, उच्च प्रकाश तथा कुछ हद तक गर्म तापक्रम की आवश्यकता होती है।इसके बीजों से इसका पुर्नउत्पादन बहुत ही कम होता है अतः साधारणतयाः इसे ताजा वर्ष की टहनियों से कटिंग लेकर (15से.मी) नर्सरी में उगाया जाता है। इसके लिये उत्तम समय फरवरी–मार्च माना जाता है। कटिंग्स को पेक्लोब्यूट्राजोल से क्रिया करने पर इसकी जड़ें जल्दी आ जाती है। फरवरी–मार्च में जड़युक्त कटिंग्स को खेत में 25 से.मी.ग25 से.मी. की दूरी पर

रोपित कर दिया जाता है तथा एक हल्की सिंचाई रोपित पौधों को जमाने के लिये दी जाती है। खेत में जुताई कर रिज (Ridge) बना दी जाती है। जिन पर 25–25 से.मी. की दूरी पर पौधें लगाये जाते हैं। इस प्रकार एक एकड़ में 30,000 पौधें लगाये जाते है। स्टीविया की खेती को अधिक पानी चाहिये तथा गर्मियों में इसकी 3–3 दिवस में लगातार सिंचाई करते रहना जरूरी है।रोपण के 1 माह बाद पहली निराई की जाती है तत्पश्चात आवश्यकतानुसार 15 दिवस से 1 माह के अन्दर खेत को खरपतवार से मुक्त करने के लिये निराई की जानी चाहिये। इस पौधें में रोग प्रतिरक्षण के गुण है तथा इस पर सामान्यतया कोई रोग नहीं लगता है परन्तु कभी–कभी बोरोन की कमी से पत्तियों पर धब्बे हो जाते हैं जिसे 6 प्रतिशत बोरेक्स का छिडकाव कर समाप्त किया जा सकता है।

4.फसलोत्पादनः—रोपण के तीन महीनें पश्चात् यह फसल पहली कटाई के लिये तैयार हो जाती है। स्टीविया की पत्तियॉ ही व्यापार हेतु उपयोगी हैं अतः इनका उत्पादन बढ़ाने के लिये फूलों को तोड़कर फेंक दिया जाता है। फूलों की तुड़ाई 30,45,60,75 और 85 दिनों के अन्तराल पर की जानी चाहियें। इसकी कटाई तने को जमीन से 5—8 से.मी ऊपर तक हिस्सा छोड़ते हुए की जाती है। जिससें की छोटे हिस्से से पुर्नउत्पादन हो सके। इसके पश्चात् पुनः 90 दिवस पश्चात् यह फसल पुनः कटाई के लिये तैयार हो जाती है। एक वर्ष में इस प्रकार कम से कम 4 बार फसल की कटाई की जा सकती है।

5. औषधीय उपयोग :— इसके मुख्य रूप से दो कम्पाउण्ड स्टीवियोसाईड तथा रिबौडिसाईड—ए प्राप्त किये है जिनमें इन्सूलिन संतुलन के गुण पाये गये है।

स्टीविया से प्राप्त स्टीवियोसाईड दूसरे कम कैलोरी वाले मीठों के विपरीत 100 डिग्री सेल्सियस तापक्रम तथा 3—9 पी.एच तक स्थिर रहता है। यह शून्य केलोरी मीठा है तथा फर्मेंट नही होता हैं, पकाने पर यह काला भी नही होता है। डायबिटीज के रोगियों के लिये

तथा कैलोरी के प्रति जागरूक व्यक्तियों के लिये मीठे का एक अति उत्तम विकल्प है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com